RNI No.-90387CHHBIL/2006/17830
ISSN-0973-6387
Jan-March 2013, Price-200/-

A Registered & Refereed International Research Journal

Research Digest

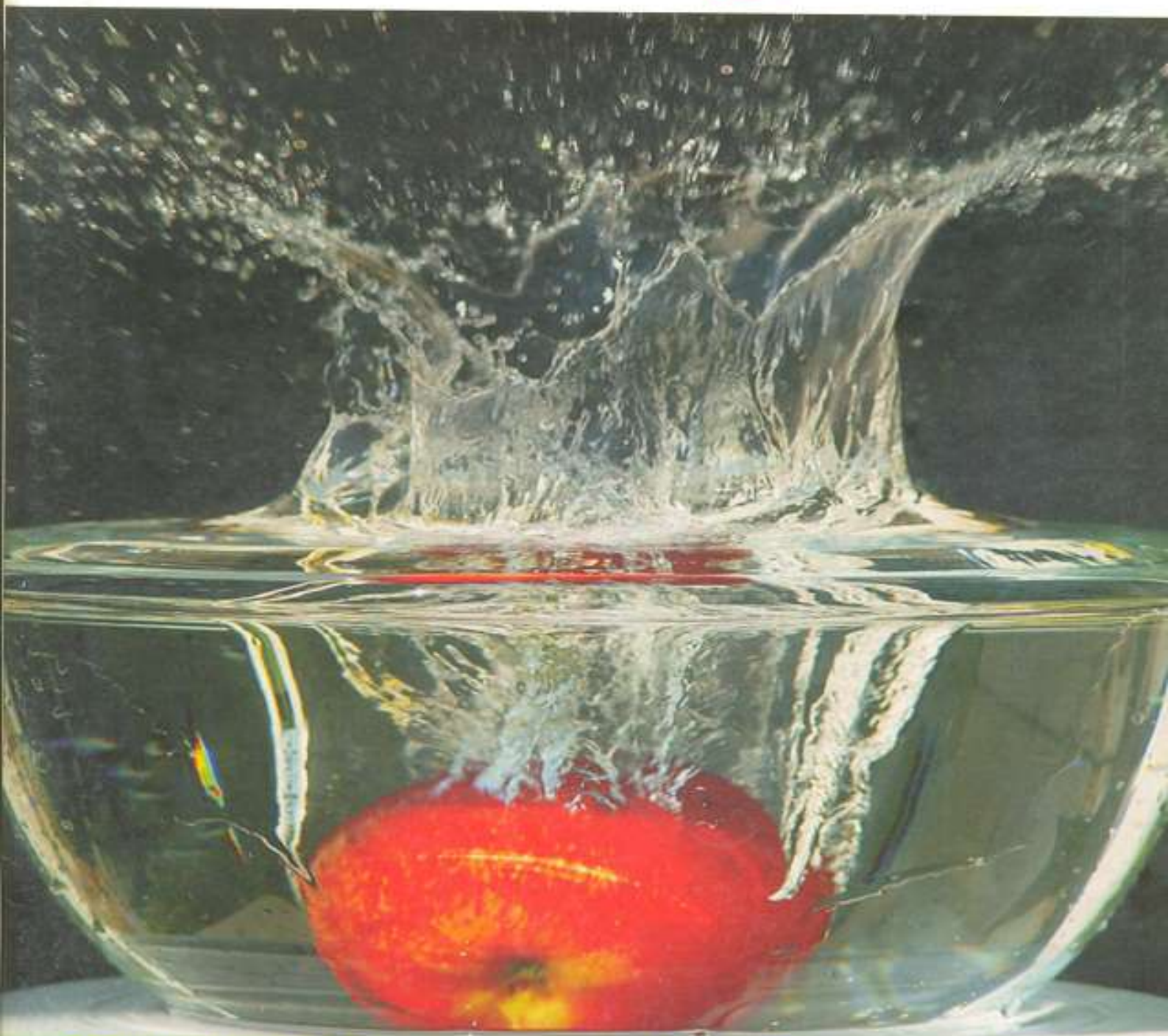

Circulation Area - J & K, Himachal Pradesh, Punjab, U.P. Uttaranchal, Madhya Pradesh, Maharashtra, Gujrat, Chhattisgarh, Orissa, Andhra Pradesh, Tamilnadu, Kerala, Karnataka, Andaman & Nicobar Island



Dr. S.K. Tiwari

75	छत्तीसगढ़ व आदिवासी जिला जशपुर की जनांकिकीय पृष्ठभूमि	डॉ. के.के. शर्मा
79	निबंध रूप (व्यंग्य व ललित) लेखकों का निबंधगत तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. रमेश टण्डन
83	छत्तीसगढ़ विभाजन के पश्चात् अर्थव्यवस्था का अध्ययन	डॉ. राजभानु पटेल, कु. कृष्णा साहू, रामप्रसाद चन्द्रा
88	सहकारी बैंकों में कालातीत ऋणों की समस्याएं - कारण एवं निदान (छत्तीसगढ़ राज्य के जिला सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक के विशेष सन्दर्भ में)	डॉ.शारद चन्द्र बाजपेयी, डॉ.एच.एल.अग्रवाल
91	आंतकवाद : एक समस्या	अरूण जायसवाल, डॉ0 संध्या जायसवाल
93	भारत का राजनीतिक विकास : मूल्यांकन का संभावित मापदंड	डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
95	मुगल बादशाहों के विशेषाधिकार - एक अध्ययन	डा. कमलेश कुमार शुक्ल
97	छत्तीसगढ़ लोक साहित्य	डॉ. अंजनी पाठक, डॉ. बृजेन्द्र पाण्डेय
99	महिला कृषि श्रमिकों की व्यावसायिक स्थिति	डॉ. दीपिका गुप्ता
103	कैरियर परीयता के संदर्भ में कैरियर काउंसलिंग के प्रभाव का अध्ययन	श्रीमती प्रीति तिवारी, डॉ. श्रीमती पल्लवी शर्मा
107	उत्तर-आधुनिकतावाद और अलका सरावगी का उपन्यास "एक ब्रेक के बाद"	डॉ. सुरेश बी. पटेल
111	छत्तीसगढ़ अंचलीय साहित्यकार श्री बच्चू जांजगिरी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : एक विवेचन	डॉ.एस. के. तिवारी, डॉ. अंजनी पाठक
114	संप्रेषण माध्यम के रूप में कहानी एवं अभिनय की भूमिका	श्रीमती नीला चौधरी, डॉ.रजनी यादव

Copyright © Dr. S.K.Tiwari

- Research Digest is a Registered and Refereed Quarterly Research Journal. Matters related to research papers such as selection/ acceptance/rejectionis decided by editorial board with the help of advice given by Subject Expert of the concerning subject. In this regard the final decision will be of editors which is binding to all.
- All the work related to editing, publication, consultation is on honorary basis. Publication of regular issues depends on the availability of research papers.
- The views expressed in the articles are those of individual authors. Editors/Publisher do not take responsibility for issues related to intellectual property or other matters.
- All the disputes related to Research Digest will come under jurisdiction of Bilaspur Court only.

Letter From The Editor



It is a wishful thinking of the Press Council of India Chairman Mr. Markandey Katju, who has remarked that Pakistan and India will reunite one day. There are several people in this country who believe the same way as Mr. Katju, and dream about having an 'Akhand Bharat' one day. But they are all living in a illusory world, far away from the ground reality. Sixty-six years after the severing of the umbilical cord by the Britishers, India and Pakistan only drifted apart. While India has emerged as a global power, arch rival Pakistan is sinking in deep morass. Therefore, talks of India-Pakistan reunion seem irrelevant.

There are several reasons why it is impossible for India and Pakistan to reunite. Pakistan was formed on the basis of religion, not on the principles of secularism. Since its inception, Pakistan behaved like a spoilt child, and never tried to follow the correct path. It always envied the progress made by India in all spheres of life. The feeling of neibhbour's envy, fear psychosis about India and religious bigotry are so deeply entrenched in the social fabric of Pakistan that it is difficult for it to weave a new social order acceptable to the world.

The total mess Pakistan finds itself in is of its own making. The two nations, India and Pakistan, were born around the same time. While India found its bearings soon after independence and started taking baby steps on the path of progress, Pakistan continued to falter. Instead of correcting the course midway by showing pragmatism and maturity in thinking and working hard to better the lives of its countrymen, Pakistani rules pushed the nation further into the ditch.

India bashing became the whole time job for the rulers, who wanted to cling to power by raising anti-India bogey. The leaders never lost any opportunity to harm India's interest. The same policy of bleeding India continues even now. The hand of friendship extended by India was ignored every time instead, wars were imposed on India. It has become a routine for Pakistani rulers to talk of friendship with India and at the same time backstab it.

Looking at the state of affairs in Pakistan, one feels relieved that Pakistan is separated from India. The problems of religious fundamentalism, terrorism, economic instability and all other ills Pakistan is facing would have been ours had there been no Partition. It would be naive to believe that the people of India will forget the misdeeds of Pakistan and embrace it with open hands, as some people still believe.

(Dr. S.K.Tiwari)

निबंध द्वय (व्यंग्य व ललित) लेखकों का निबंधगत तुलनात्मक अध्ययन

व्यंग्य निबंधों एवं ललित निबंधों के अनुशीलन से स्पष्ट है कि निबंधों की प्रभावोत्पादकता, पाठकों के बीच संप्रेषणीयता एवं सुरूचिपूर्ण आत्मसात की प्रक्रिया में अंतर है। ललित निबंधों में प्रौढ़ चिंतन, उच्च स्तरीय वैचारिकता, भावनात्मक प्रतिबद्धता, चिंतन की गहनता,भावात्मकता में अभिधेयता, सोच की मौलिकता, मौलिक चिंतन, भावनात्मक अभिव्यक्ति, यथास्थान तार्किक व दार्शनिक चिंतन की प्रमुखता है जिससे उत्पन्न भाषा की अस्पष्टता व दुरूहता की वजह से सामान्य पाठकों के बीच लगाव कायम रखने में असफलता पायी गयी है। जबकि व्यंग्य निबंधों में हास्य के लालित्य और विचारात्मकता के समावेश के कारण पाठकों में गुदगुदी करने एवं उत्सुकता बनाये रखने में लोकप्रियता पायी गई है। अतः भाव संप्रेषणीयता के आधार पर व्यंग्य निबंध, ललित निबंधों से भारी पड़ता है।

जैनेन्द्र कुमार के "सामाजिक विचारात्मक निबंधों का प्रणयन प्रमुख रूप से 'इतस्ततः'की स्फूट रचनाओं में हुआ है जिसमें लेखक ने अपने स्त्री–पुरूष सम्बन्ध विषयक विचारों को कलात्मक शैली में स्पष्ट किया है। लेखक विवाह और प्रेम को दो समानान्तर रेखाओं में चलते हुए देखना चाहता है। इसके दूषित पक्ष का चित्रण करते हुए लेखक ने पुरूष जाति के व्यभिचारों पर कटु व्यंग्य प्रस्तुत किए हैं। जो धर्म में तो सती धर्म चाहते हैं और बाहर उन्हें ऐसी स्त्रियों की आवश्यकता होती है जो पत्नी न हो।"(1) शांति प्रिय द्विवेदी ने अपने निबंध " 'चित्र और चिंतन' 1964 में अपने जीवन के अभावगत चित्रों को स्मृति में संजोते हुए सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों की विसंगतियों पर व्यंग्य प्रस्तुत किए हैं।"(2) वैसे बाबू गुलाबराय जी ने "हास्य की हर रोज होली और ज्ञान की हर रात दिवाली" (3) जैसी उक्तियों से यह प्रकट किया है कि एक ओर हास्य का लालित्य और दूसरी ओर विचारात्मकता का समावेश निबंध की अन्यतम विशेषता है। पंडित माखनलाल चतुर्वेदी को प्रतीक और अन्योक्तियों के माध्यम से अपनी बात कहना या लेख प्रस्तुत करना अधिक प्रीतिकर लगता है। शब्द सम्पदा की दृष्टि से उन्होंने अपने निबंधों में विविध भाषाओं के शब्दों को ग्रहण किया है। " 'मैंने सिल पहुँचाई' के निबंध 'पत्र इण्टेलेक्युअल' में विद्यानिवास मिश्र ने पत्र के माध्यम से कलात्मक भावपूर्ण शैली में परंपरा और आधुनिकता पर मधुर व्यंग्य प्रस्तुत किया है।"(4) पंडित विद्यानिवास मिश्र के व्यंग्य निबंधों में वचन वैदग्ध्यता इस प्रकार है, "जिन्हें अपने बाप का पैर छूने में हिचक होती है वे अपने अफसर के या मंत्री के पैर छूने का अवसर पाने में ही अपने को बहुत गौरवान्वित मानते हैं।"(5)

हजारी प्रसाद द्विवेदी के व्यंग्य निबंधों में वचन वैदग्ध्य इस प्रकार है, "आज है इस निरूपाय निरन्न निर्वाक मूढ़ जनता की बेतुकी भीड़ जो जीते हैं, इसलिए कि मौत नहीं आ जाती; और मरते हैं,इसलिए कि जीने का कोई रास्ता नहीं।"(6) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के व्यंग्य निबंधों में जोश से भरा बयान द्रष्टव्य है, "पाणिनी की संतान आज हींग बेचती है,क्योंकि वह हिन्दू नहीं है और जो हिन्दू नहीं,उसके लिए पूर्वजों की सर्वश्रेष्ठ वस्तुएँ भी त्याज्य है। यहाँ लोगों को कुत्ते बिल्ली से भी बदतर माना जाता है, क्योंकि वे हिन्दू होते हैं। यहाँ विधवाओं को फुसलाया जाता है और गर्भपात भी कराया जाता है क्योंकि वे हिन्दू हैं। यहाँ वेश्याओं को मंदिर में ले जाया जाता है, पर सती अत्यंत–रमणियों को प्रवेश नहीं करने दिया जाता,क्योंकि वे हिन्दू हैं। यहाँ अन्याय को न्याय कहकर चला जाता है।"(7)

डॉ.दया.ष्ण विजयवर्गीय 'विजय' के व्यंग्य भी यथार्थ के धरातल पर तो अवश्य अवस्थित हैं,पर तर्क एवं विचार के अधिष्ठान पर खड़े हैं। आपके पहले संग्रह 'साहित्य संस्ति और युगबोध' 2000 के भाग–दो 'प्रसंगवश' में व्यंग्य निबंध की अधिकता है। ये निबंध 1990 से 1993 के बीच के हैं। आपने दलित साहित्य,शोक दिवस मनाने, रक्षाबंधन के नये आयाम,पुरस्कार के पीछे भागमभाग,कवि सम्मेलनों के बढ़ते रूप,शिक्षा शास्त्रियों के ढपोरशंख आदि पर व्यंग्यार्थ प्रस्तुत किया है। डॉ.रामप्रसाद मिश्र ने भ्रष्टाचार,जन पाखण्ड,नेतृपाखण्ड, बौद्धिक व्यभिचार प्रवृति का विराट समावेश किया है। बौद्धिकता, निस्संगता एवं भाषा स्तर आपके साहित्य की प्रमुख विशेषता है। आपके व्यंग्य साहित्य जिसमें बड़ी संख्या में निबंध विद्यमान हैं, न दलगत व्यंग्य हैं, न अखबारी व्यंग्य, न

डॉ. रमेश टण्डन, सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय महाविद्यालय, खरसिया (छ.ग.)

अर्थलाभ व्यंग्य। आपने नव्यतम समस्याओं को नव्यतम आयामों में उठाया है,आपके व्यंग्य बौद्धिकता एवं तार्किकता से प्रेरित है। आपके व्यंग्य की चित्रण–शैली भिन्न है,दृष्टिकोण 'बद्ध' न होकर 'मुक्त' है।

आचार्य निशांतकेतु के ललित निबंध। संकलन 'ललित लेख'(1986) 30 ललित निबंधों का संग्रह है जिसमें विशेषकर निंदा–रस निबंध व्यंग्य है। आपके दूसरे निबंध संग्रह 'ललित चिंतन (1993) में अनेक स्थलों पर सामाजिक वि.तियों और विडम्बनाओं तथा विद्रूपता और विपथगामिता पर गहरा व्यंग्य है। आपके अन्य निबंध संग्रह 'समसामयिक निबंध'(2001) में अस्सी निबंध समाहित हैं एवं अनेक स्थलों पर व्यंग्य स्पर्श हैं। आचार्य निशांत केतु जी की मान्यता है,"जो काम अनुनय–विनय अथवा आक्रोश से साधित नहीं होता, वह व्यंग्य से हो जाता है। एक आम आदमी और कुछ नहीं तो चिढ़ा तो सकता है। कबीर के हाथ में अपने तद्युगीन समाज के लिए अन्य कोई सुधारात्मक उपाय तो नहीं था,किन्तु चिढ़ाने की कला उन्हें सिद्धहस्त थी। उन्होंने ऐसा चिढ़ाया और इतना चिढ़ाया कि कबीर शिखर पर चढ़ गए और विडम्बना और विद्रूपता करने वाले लोग तलहटी में इस तरह छटपटाते रहे,जैसे देह का विभाजन रुंड और मुंड में हो गया है। व्यंग्य में बाण की तीव्रता और चुभन होती है,जो हास्य में सम्भव नहीं है।"(8) डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर के निबंध संग्रह 'सीढ़ी और सांप'(1996) में हलकी–फूलकी व्यंग्यात्मक शैली में 'किस्सा कुरसियों का' लिखा गया है,जिसमें कुर्सी के आधुनिक विभिन्न अर्थ और आशयों का उल्लेख है,पद की गरिमा से लेकर पद लोलुपता तक का। वचन वैदग्ध्य का पुट भी मिलता है, "सरकारी सेवा वाले लंबी छुट्टी लेने से कतराते हैं क्योंकि लौटने पर पुरानी कुर्सी नहीं मिलती।"(9) डॉ. अय्यर ने अपने व्यंग्य में मानवीकरण का प्रयोग किया है, "एक दिन रात को अपनी कुर्सी को कुछ फुसफुसाते सुना। पूछा–'मेरे आश्रयदाता! आदेश दीजिए।' उसने कहा–तुम मेरा 'गोत्रयान' क्यों नहीं लिखते? मैंने निवेदन किया कि गोत्रयान लिखने की क्षमता मुझमें नहीं; मगर आपके वंशजों का स्तोत्रगान कर सकता हूँ।"(10) फोन पर किसी के डांट (खासकर पत्नी के) के प्रभाव को छिपाकर झूठी हँसी करने की ऑफिसर की प्रवृत्ति को उभारा गया है, "दतर में अन्य दर्शकों की उपस्थिति में फोन उठाते अफसर महोदय घर से श्रीमती के आशीर्वाद फोन पर सुनने पर भी फीकी हँसी हँस सकते हैं।"(11)

ललित निबंध (व्यंग्य विहीन निबंध):

'समय और हम' और 'प्रश्न और प्रश्न' संकलनों में जैनेन्द्र कुमार ने समाज,अध्यात्म संबंधी प्रश्नों के समाधान प्रस्तुत किए हैं। 'राष्ट्र और राज्य' में लेखक ने राष्ट्रीय जागरण और सांस्.तिक नवोत्थान पर पांच क्रमबद्ध लेख प्रस्तुत किए हैं। इतस्तः और परिप्रेक्षा की रचनाओं को लेखक यद्यपि लेख की संज्ञा प्रदान करता है तथापि उनमें रोचक,आकर्षक और प्रेरक तत्व विद्यमान है। जैनेन्द्र जी ने मुख्यतः व्यास शैली का आधार ग्रहण किया है। इनके निबंधों के संदर्भ में डॉ. प्रेम नारायण टंडन का विचार है कि "जैनेन्द्र के ये निबंध जहाँ एक ओर वैचारिक गहनता के गुण से पूरित हैं,वहाँ भाषा की अस्पष्टता और दुरूहता भी देखी जा सकती है।"(12) वस्तुतः उनकी शैली में जो कुहासा व्याप्त है वह उनके चिंतन का है,भाषा और शैली का नहीं। कुछ विशेष स्थलों पर चिंतन की दुरूहता ने भाषा–शैली पर भी अपना आवरण डालना चाहा है परन्तु जैनेन्द्र इन निबंधों में प्रायः स्पष्ट अभिव्यक्ति प्रदान कर गए हैं।

शांतिप्रिय द्विवेदी के 'चित्र और चिंतन' संग्रह के प्रथम ग्यारह निबंधों और 'स्मृतियों और .तियाँ' संग्रह के स्मृतिखण्ड की सभी रचनाएँ संस्मरण और आत्म संस्मरण के रूप में व्यक्त हुई हैं। 'चित्र और चिंतन' के निबंधों में उन्होंने उपन्यास शैली के अनुरूप विमल और कमल की जीवनी प्रस्तुत करते हुए आत्मकथा के विविध खण्ड चित्रों को सजाया है। " 'स्मृतियाँ और .तियाँ' संकलन में मुख्य रूप से पुस्तक समीक्षाओं को ही संकलित किया गया है। इस वर्ग की रचनाओं में हजारी प्रसाद द्विवेदी .त 'हिन्दी साहित्य' की समीक्षा उल्लेखनीय है। सर्वप्रथम उन्होंने उक्त .ति के कवर पेज पर लगी छोटी–सी चिट की ओर ध्यान आ. ष्ट किया है,जिस पर लिखा है: 'इसके संक्षेप और कुंजी का अधिकार प्रकाशक तथा लेखक का स्वाधि.त्य है,अतः कोई भी व्यक्ति इसकी कुंजी अथवा संक्षिप्त संस्करण प्रकाशित न करे।' इस उक्ति के आधार पर उन्होंने इसे परीक्षोपयोगी पुस्तक स्वीकार किया है।"(13) साहित्यिक .तियों के अतिरिक्त द्विवेदी जी ने साहित्यकारों की प्रवृत्तियों का स्वतंत्र विवेचन भी प्रस्तुत किया है। सामाजिक विषयों पर निबंध रचना के संदर्भ में बाबू गुलाबराय की समन्वयात्मक प्रतिभा के नैतिक और सांस्.तिक पक्ष विशेष रूप से व्यक्त हुए हैं। 'प्राचीन की आधारशिला पर ही नवीन के भव्य–भवन का निर्माण' लेखक का अभीष्ट है। अतः इन निबंधों में भारत के संविधान के अनुकूल किसी एक धर्म के प्रति आग्रह के स्थान पर निबंधकार को भारतीय संस्.ति उसकी समग्रता में प्रिय है। गुलाबराय जी के राजनीतिक निबंधों के अनुशीलन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सक्रिय राजनीति से सर्वथा असम्बद्ध होते हुए भी उन्होंने स्वतंत्र भारत के विभिन्न सामयिक प्रश्नों का गम्भीरता से विशद विवेचन किया है। वे स्वतंत्र राष्ट्र के प्रति गर्व की भावना रखते हुए उसके स्थान में प्रसन्न और अवनति में दुखी हुए हैं। इस दृष्टि से 'राष्ट्रीयता' और 'मेरे निबंध' के अनेक निबंध उल्लेखनीय है। इन्होंने शुद्ध मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित निबंधों के अतिरिक्त मनोविज्ञान के सिद्धान्तों से पुष्ट निबंधों की भी रचना की है। प्रथम वर्ग के निबंधों में उन्होंने सिद्धांत और व्यवहार दोनों पक्षों के सन्तुलन विवेचन के लिए एक ओर साहित्यिक उद्धरणों का आश्रय लिया है और दूसरी ओर लालित्य के लिए आत्मीय संवेगों को स्थान दिया है। इन्होंने मनोविज्ञान के सिद्धांतों से पुष्ट निबंधों में सिद्धांत–विवेचन

के स्थान पर मानवीय प्रवृत्तियों का आलेखन भी साहित्य मनोविज्ञान के संदर्भों के आधार पर किया है।शिल्प की दृष्टि से माखनलाल चतुर्वेदी जी के निबंध अन्य गद्यकारों के निबंधों से वैविध्य प्रस्तुत करते हैं। गद्य काव्य के बिम्बों और प्रतीकों का आश्रय उनकी प्रमुख विशेषता है, किन्तु उन्होंने जिस स्वछन्दतावादी दृष्टिकोण और भाषा की सरसता पर बल दिया है वह कहीं–कहीं विचार धरातल पर आकर अपना वांछित प्रभाव खो बैठती है। कहीं सांकेतिक विश्लेषण के आधार पर सन्दर्भ सूत्र ग्रहण करने होते हैं और कहीं–कहीं बिम्बों की उलझन में विचार दब जाते हैं। चिन्तन की गहनता और लाक्षणिकता प्रभाव प्रस्तुत करने के प्रयत्न में आवरण युक्त हो जाती है। और निबंधों का पाठक भाषा की स्निग्धता, अनुभूति की विशदता,चिन्तन की गहनता और भावात्मकता में अभिधेय अर्थ में भटक जाता है। इनके निबंधों में लाक्षणिकता, सांकेतिकता और वक्रोक्ति के कारण जो कुहासा–सा छा गया है, उसे प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता। तथापि सामाजिक विचारात्मक निबंधों के सर्जनात्मक लालित्य को पाठकों के तादात्मय–भाव को प्रश्रय प्रदान करने के कारण निबंध को शैली की दृष्टि से उपलब्धि ही कहा जाएगा।"रचना प्रक्रिया की दृष्टि से पं.विद्यानिवास मिश्र जी के निबंध सरस चिन्तन–क्रम प्रस्तुत करते हैं।"(14)

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने भारतीय और पाश्चात्य निबंध प्रणालियों की विविध धाराओं में संतुलित सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया है। इनके निबंधों में इनकी आत्मा के मानवतावादी और सांस्कृतिक पक्ष को श्रेष्ठ अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है। "शास्त्र और बुद्धि का समन्वय उनके निबंधों की अन्यतम विशेषता है।"(15) अंत में यह उल्लेखनीय है कि द्विवेदी जी के निबंधों में व्यक्ति व्यंजकतावादी निबंध–कला का श्रेष्ठतम रूप देखने को मिलता है।

डॉ.दयाष्ण विजयवर्गीय 'विजय' के निबंध गंभीर साहित्यिक और सांस्कृतिक विषयों को सहेजे हैं। सभी निबंधों में सोच की मौलिकता तथा विषय को व्याख्यायित करने की प्रशक्त ललक दिखाई देती है। ये सतही निबंध न होकर विषय को गहराई तक जाकर परखने वाले हैं तथा कथन की भंगिमा के साथ संवेदना जनित वस्तु को ऊँचाई प्रदान करने वाले हैं। समकालिन शब्दों को भी आपके निबंधों ने स्थान–स्थान पर व्याख्यायित कर, वाम लेखकों की मान्यताओं को नकार,नवीन शब्दार्थ के साथ युग संदर्भों के साथ जोड़कर देखा है। इसी कारण निबंधों के विषय आज के ज्वलंत प्रश्नों को विशेषकर साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक प्रश्नों को सहेजे हैं।आचार्य निशांतकेतु जी के तीन निबंध–संग्रह प्रकाशित हैं एवं उनके निबंधों में विषयगत विचार–गांभीर्य एवं चिंतन–अनुचिंतन का वृहत् आयाम है।

डॉ. एन.ई. विश्वनाथ अय्यर के ललित निबंधों में केरल की महक मिलती है। यात्रा का प्रसाद इनमें सुलभ है। भारतीय संस्कृति की झांकी इनमें है। सरसता और मुहावरेदार भाषा इनकी कलागत विशेषताएँ हैं। 'राग अमृत वार्षिकी', केरल की माँ अमृतानन्दमयी के प्रति भक्तिभावना से ओतप्रोत विवरण है जिनके आश्रम से धार्मिक, नैतिक प्रवचन के अतिरिक्त दीन दुःखियों की परिचर्या होती है। इन्होंने काव्य पंक्तियों के माध्यम से निबंध की अभिव्यक्ति की है, "माँ के विषय में कहने की बड़ी इच्छा हो रही है। पर तुलसीदास की पंक्ति ही स्मरण आती है– गिरा अनयन नयन बिनु बानी।"(16) अलंकारिक वाक्यों का प्रयोग हुआ है– "आप दुबारा–तीसरी बार, चौथी बार – बराबर माँ के दर्शन के लिए जाते हैं। माता आपको पहचान लेती है। जैसे गाय सैकड़ों बछड़ों की भीड़ में भी अपने बछड़े को पहचानती है। रंभाहट से बछड़ा भी माँ को पहचानता है।"(17) उपर्युक्त उद्धरण में निबंध की 'व्यक्तित्व की प्रधानता' विशेषता की पूर्ति होती है। संस्कृत श्लोकों का प्रयोग भी बहुतायत में मिलता है, "गोमत्यैः फलपुष्पदुग्धतरूभि – श्याद्या समा प्राक्प्लवा।.....मिश्रिता मध्यमा।"(18) एवं "रम्याणि वीक्ष्य मधुराश्चं निशम्य शब्दान् ..... भाव स्थिराणि जननान्तर सौहृदानि।"(19) आपके निबंधों में चिंतन परक विशेषताओं की झलक मिलती है, "यों अद्भुत शक्तिशालिनी माँ आपको पहचानती है। अपने मन की समस्या तक पहचानती है। ये सब बहस की बातें नहीं अनुभव की बात है।"(20)

लेखकों का मत

ललित निबंधों से व्यंग्य निबंधों की तुलना के संदर्भ में विद्वान लेखकों का मत यहाँ द्रष्टव्य है। डॉ. एन.ई. विश्वनाथ अय्यर के थैया संकलन 'सीढ़ी और सांप' की भूमिका लिखते हुए डॉ. ष्णचन्द्र गुप्त जी ने लिखा है – 'सामान्य तथा विशिष्ट पाठक भी निबंध पढ़ने से बचता है – गंभीरता व तार्किकता के अनावश्यक बोझ के कारण।' आचार्य निशांतकेतु जी की मान्यता है कि जो काम अनुनय–विनय अथवा आक्रोश से साधित नहीं होता, वह व्यंग्य से हो जाता है। डॉ. रामप्रसाद मिश्र का मत है कि आज का अधिकांश 'चर्चित' साहित्य 'बद्ध' है 'मुक्त' नहीं; और, व्यंग्य निबंध अपवाद नहीं। डॉ. दयाष्ण विजयवर्गीय 'विजय' का विचार है कि समकालीन व्यंग्य निबंध का चिंतन वायवी है। उनका धरातल सतही है। उनमें गहराई का अभाव है। औदात्य तो उन्हें छू तक नहीं गया है। साथ में स्वयं के व्यंग्य पर उन्होंने लिखा कि उनके व्यंग्य भी यथार्थ के धरातल पर तो अवश्य अवस्थित है, पर तर्क एवं विचार के अधिष्ठान पर खड़े हैं। ज्ञानेन्द वर्मा की मान्यता है कि कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करने में निबंधकार प्रायः मूल विषय से संदर्भ खो बैठते हैं। गोविन्द मिश्र जी ने लिखा है कि निबंध, बात को सीधा रखते हैं और भावाकुलता अधिक है। हँसने या मजाक उड़ाने के बजाय निबंधों में पीड़ा और दुःख का स्वर मुख्य है। संदर्भगत डॉ. एन.पी. कुट्टनपिल्लै की धारणा है कि निबंध उच्च स्तरीय वैचारिकता, प्रौढ़ चिंतन एवं रोचक विश्लेषण शैली से अलंकृत होने चाहिए। डॉ.

हरीश नवल ने लिखा है कि 'व्यंग्य एक कठिन विधा है। जन करूणा का पारावार जमा हो जाता है तब व्यंग्य फूटता है।.... व्यंग्य पढ़कर यदि कुछ कचोटें, कुछ भारीपन लगे,कहीं मन में विरोध की लहर उठे तथा स्थिति की त्रासदी पाठक को समझ आए – मेरा व्यंग्यकार संतुष्ट होता है।' कांतिलाल ठाकरे ने व्यंग्य को दिशा दर्शक व जीवन दर्शन से भरपूर बताया है। अरूणकुमार ने 'जिस व्यवस्था में,जिस देश में आम आदमी का परिचय समूचे राष्ट्रीय परिदृश्य से लुप्त होता जा रहा है वहाँ क्या परिचय' की व्यंजना की है। विनोद साव जी सरल भाषा में आम आदमी की कुंठाओं को उघाड़ने की बात कहते हैं। डॉ. शिव शर्मा के अनुसार, व्यंग्य लिखने के लिए सन्यास लेकर किसी आश्रम में जाने की आवश्यकता नहीं होती। जब तक समाज में विसंगतियाँ, अन्याय, अत्याचार, असमानता है तब तक व्यंग्य की फसलें लहलहाती रहेंगी। सुधीर ओखदे व्यंग्य लेखन को मजबूरी नहीं कर्तव्य मानते हैं। विसंगतियों से आँख चुराकर चुप नहीं बैठने वालों की कलम से व्यंग्यकार की हैसियत से समाज सेवा टपकती है।

निष्कर्ष –

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि ललित निबंधों में विषय को व्याख्यायित करने की प्रशस्त ललक दिखाई देती है जबकि व्यंग्य निबंधों में संदर्भित विषय के नकारात्मक पक्ष पर प्रहार करते हुए उसकी वास्तविक स्थिति की निरूपमा की जाती है। ललित निबंधों में व्यंजकतावादी, व्यक्तित्व प्रधानता के प्रयोग यदा–कदा ही दिखता है जबकि व्यंग्य निबंधों में प्रायः सभी व्यंग्यकारों ने आत्मव्यंग्यात्मक निबंध लिखे हैं। ललित निबंधों में कलागत विषय–प्रस्तुतीकरण एवं अभिव्यक्ति प्रदान करने से मूल विषय से संदर्भ खो बैठने का खतरा रहता है एवं स्वच्छन्दता दृष्टिकोण से विचार के धरातल छोड़ने का डर बना रहता है लेकिन व्यंग्य निबंधों में विषय की प्रस्तुति ही सौन्दर्य–कला से युक्त कटाक्ष होती है जिससे पाठकों में मीठा–सा दर्द उत्पन्न हो जाता है जो उनके भावों को यथाशक्य कुरेदने का कार्य करता है। भाषा की स्निग्धता एवं अनुभूति की विशदता तथा गंभीर व व्यापक दृष्टिकोण से ललित निबंधों का विषय–विवेचन होता है, इसके विपरीत सरल भाषा में सच्चाई की धरातल पर छोटी–सी–छोटी मान्यताओं को परखा जाता है, व्यंग्य विसंगतियों को कुरेदा जाता है। सच्चाई की धरातल में वस्तुस्थिति का निरूपण व्यंग्य निबंधों में होता है जबकि उपदेशात्मक ढंग से विचारदीप्त एवं संस्मरणात्मक निबंध की रचना ही ललित निबंधकारों का मुख्य ध्येय रहा है। ललित निबंधों में नारी की विवशता, सामाजिक–पारिवारिक स्थिति, उनके धैर्य–साहस की निष्पत्ति, बच्चों की परवरिश, कामकाजी महिला की समस्या, दहेज, शोषण, श्रृंगार, भ्रूण हत्या, हिन्दू विवाह, स्त्री अधिकार आदि की व्याख्या करते हुए विचार प्रस्तुत किया जाता है जबकि व्यंग्य निबंधों में इसी नारी के पश्चिमी सभ्यता अंधानुकरण, किटी पार्टी में भागीदारी, मिनी स्कर्ट की बोलबाला, दहेज के विरूद्ध क्रांति की बिगुल फूंकने एवं उनकी शक्तिरूपा को उद्घाटित कर पहचानने तथा फूहड़ता के दिग्दर्शन को धरातल दिया गया है। ललित निबंधों में सूक्ति शैली, अलंकार चयन, प्रश्नोत्तर–प्रश्नात्मक शैली, सरस मुहावरेदार भाषा, व्यास शैली, उक्ति के प्रयोग तथा बिम्ब, प्रतीक योजना का प्रयोग यदा–कदा दिख जाता है। इसी क्रम में व्यंग्य निबंधों में अलंकारिक शब्दों के प्रयोग, संवाद शैली, लोकोक्ति एवं मुहावरों का प्रयोग, व्यास एवं समास शैली का मिश्रण, प्रतीक बिम्ब का अधिकाधिक प्रयोग की पूर्णता रहती है। ललित निबंधों में भारतीय संस्कृति की झांकी देखने को मिलती है जबकि व्यंग्य निबंधों में भारतीय संस्कृति के अवमूल्यन की माप होती है।

अंत में, किसी विषय के मात्र वर्णनात्मक व्याख्यान की तुलना में उसमें निहित दोषों को उकेरे जाकर उसमें सुधार की अपील, स्वस्थ मानसिकता की मांग है। साथ में आम पाठक की समझ एवं सच की धरातल पर उसकी कसौटी, एक सच्चे एवं प्रतिबद्ध लेखक का ध्येय है। इस अर्थ में व्यंग्य निबंध ही श्रेष्ठ है। जहाँ पग–पग पर विसंगतियाँ विद्यमान हैं वहाँ विचार नहीं, कलमी आक्रमणकारियों की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची–

1. इतस्ततः – जैनेन्द्र कुमार, पृष्ठ 32
2. चित्र और चिंतन – शांतिप्रिय द्विवेदी, पृष्ठ 7
3. जीवन रश्मियाँ – गुलाबराय, पृष्ठ 148
4. समसामयिक हिन्दी निबंध – ज्ञानेन्द्र वर्मा, पृष्ठ 126
5. आंगन का पंछी और बनजारा मन – विद्यानिवास मिश्र,पृष्ठ 67
6. हजारी प्रसाद ग्रंथावली – खंड 9, पृष्ठ 429
7. हजारी प्रसाद ग्रंथावली – खंड 10, पृष्ठ 461
8. अशोक कुमार ज्योति द्वारा मुझे (रमेशकुमार टण्डन को) प्रेषित पत्र, पृष्ठ 02
9. सीढ़ी और सांप – डॉ.एन.ई. विश्वनाथ अय्यर, पृष्ठ 35
10. सीढ़ी और सांप – डॉ.एन.ई. विश्वनाथ अय्यर, पृष्ठ 30–31
11. सीढ़ी और सांप – डॉ.एन.ई. विश्वनाथ अय्यर, पृष्ठ 66
12. हिन्दी साहित्य कोश भाग–2 : संपा.डॉ.धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ 206
13. समसामयिक हिन्दी निबंध : ज्ञानेंद्र वर्मा, पृष्ठ 62
14. समसामयिक हिन्दी निबंध : ज्ञानेंद्र वर्मा, पृष्ठ 126
15. समसामयिक हिन्दी निबंध : ज्ञानेंद्र वर्मा, पृष्ठ 62
16. सीढ़ी और सांप – डॉ.एन.ई. विश्वनाथ अय्यर, पृष्ठ 17
17. सीढ़ी और सांप – डॉ.एन.ई. विश्वनाथ अय्यर, पृष्ठ 17
18. सीढ़ी और सांप – डॉ.एन.ई. विश्वनाथ अय्यर, पृष्ठ 58
19. सीढ़ी और सांप – डॉ.एन.ई. विश्वनाथ अय्यर, पृष्ठ 82
20. सीढ़ी और सांप – डॉ.एन.ई. विश्वनाथ अय्यर, पृष्ठ 17–18

***